RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-10
October-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

# प्रेमचंद साहित्य और स्त्री

मीरा सिन्हा

शोधार्थी, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

प्रेमचंद एक ऐसे रचनाकार हैं जो किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उनकी रचना ही उनका संपूर्ण परिचय है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी उर्दू के विश्वविख्यात एवं कालजयी कलाकार प्रेमचंद ने अपना लेखन कार्य उर्दू भाषा में प्रारंभ किया परन्तु धीरे–धीरे ये हिन्दी की ओर अग्रसर होते गए। प्रेमचंद बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं इन्होंने साहित्य की बहुत सारी विधा लिखी जिसमें बाल सात्यि, समीक्षा, नाटक, जीवनी, पत्र–पत्रिका एवं संपादन भी शामिल है परन्तु उनकी प्रसिद्धि उपन्यासकार और कहानी लेखक के रूप में हुई। उपन्यासकार के क्षेत्र में उनके 15 पूर्ण–अपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुए। इन्होंने प्रारंभ के 8 उपन्यास उर्दू में तथा बाद के 7 हिन्दी में लिखे हैं। इसके अतिरिक्त इनकी अनगिनत कहानियाँ है जिनमें अपने युग के नवजागरण स्वाधीनता आंदोलन के साथ समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है ओर साहित्य को जनता से जोड़ो है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की वास्तविक स्थिति पर प्रश्न उठाए हैं और उन प्रश्नों का जवाब भी अपने साहित्य के द्वारा ही दिया है। वे अपने युग के ऐसे हस्ताक्षर है जो मील का पत्थर साबित होते हैं। उनके आत्म मंथन की स्थिति उनके साहित्य में नजर आती है। इनकी लेखनी से इनका हर पात्र सजीव हो उठता है जिसका प्रमाण हमें प्रेमचंद साहित्य में मिलता है।

इन्होंने अपने उपन्यास एवं कहानियों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है और साथ ही स्त्री संबंधी समस्याओं को उजागार किया है और साथ ही स्त्री संबंधी समसयाओं को उन्होंने हमेशा केन्द्र में रखा है। इनहोंने अपनी रचना के कथानक के माध्यम से नारी की शिक्षा, रूढ़िवादिता से मुक्ति, उनकी स्वाधीनता एवं अनेक अधिकारों के लिए आंदोलन किया है। प्रेमचंद हिन्दी साहितयाकारों में एकमात्र ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने नारी–जागरण का शंखनाद किया, उसके उबला तथा दासी के परंपरागत कलंक को मिटाया, उसे शिक्षित किया और राजनीति में सक्रिय बनाया। उसे विधवा–विवाह, बेमेल–विवाह, दहेज, तलाक आदि कुप्रथाओं के प्रति सचेत किया और अपनी स्वाधीनता, अस्तित्व एवं आधिकारों के लिए संघर्ष की शक्ति प्रदान की। उन्होंने ऐसे नारी पात्रों की सर्जना की जो एक आदर्श माता, पत्नी, प्रेमिका, बहन आदि होते हुए अन्याय शोषण तथा दमन की मुक्ति के लिए लड़ सके। प्रेमचंद की स्त्री कर्मभूमि में उतरकर पुरूष के कंधे–से–कंधा मिलाकर देश की आजादी के लिए संघर्ष करती है। इनकी स्त्री पात्र में महिला के सारे लौकिक गुण हैं जो सामान्य स्त्रियों में होते हैं परंतु उसे यह कतई मंजूर नहीं है कि उसका पति उसके लिए गबन के पैसे गहने लाए। वो एक गरीब किसान के दुःख दर्द की सहभागी बन अपना पतिब्रता धर्म भी निभाती है, वो बड़े घर की बेटी भी है और उस सारे पुरूष वर्चस्व वाले परिवार में मानों अकेली मानवीय गुणों से युक्त है, वो मजबुरियो में पड़े अपने परिवार के लिए समाज के सामंत वर्ग से बिना डरे ठाकुर के कुँए पर जाकर तत्कालिन व्यवस्था को चुनौती देती है और कभी एक माँ बनकर अपने बच्चों के लिए खुद की जान भी लुटा हे। प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री–चरित्र उभर कर सामने आया है और इनकी स्त्री को देखकर ऐसा लगता है मानों स्त्री समाज की मुख्य धारा का प्रतिनिधित्व कर रही है। प्रमचंद की रचनाओं में निर्मला, मंगलसूत्र, कफन, गबन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा, बड़े घर की बेटी, प्रमाश्रम, आदि बुढ़ी काकी, पूस की राज, ठाकुर का कुंआ, दूध का दाम आदि तो पूर्ण रूपेण स्त्री पर केन्द्रित है। और इसके अलावा जितनी रचना है उसमें भी स्त्री को पुरूष के समानांतर प्रस्तुत किया गया हैं प्रेमचंद महिला पात्रों को कर्म शक्ति और साहस के क्षेत्र में पुरूष के समक्ष

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रस्तुत करते है। वे अपने एक उपन्यास में लिखते हैं–**''नारी हृदय धरती की भाँति है, जिससे मिठास भी मिल सकती है और कड़वाहट भी।''**

प्रेमचंद ने इसके अलावा स्त्री के मातृत्व को जिस तरह से प्रस्तुत किया है वो अन्य दुर्लभ है। गोदान में वो लिखते हैं–**''नारी माता है ओर इसके उपरांत वो जो कुछ है वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है। मातृत्व विश्व की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है।''**वो लिखते हैं कि –**''सेवा ही वह सीमेंट है जो दम्पति को जीवन पर्यत प्रेम और साहचर्य में जोड़े रख रकता है, जिस पर बड़े–बड़े आघातों का कोई असर नहीं होता और नारी ही सेवा का पर्याय है।''**प्रेमचंद ने स्त्री के प्रेमामुक्त छवि का वर्णन करते हुए लिखा है– ''**प्रेम सीधी–सादी गऊ नहीं, खूखार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की दृष्टि भी नहीं पड़ने देता। श्रद्धा तो अपने का मिआ डालती है और अपने मिट जाने की ही अपना भगवान बना लेती है, प्रेम अधिकार करना चाहता है।''**प्रेमचंद ने अपनी दृष्टि में गबन की जालपा को रीतिरिवाज, अंधविश्वास और संस्कारों को नकारते हुए ज्ञान के उदात्त रूप में आत्मसात किया है और यह नारी विकास का द्योतक है। वहीं कर्मभूमि में 'सुखदा' एक समाज कल्याण और आत्मशक्ति के रूप में उमरा व्यक्तित्व है। अपने घर परिवार की जिम्मेदारी निभाते हुए पति का साथ न होने पर भी बाहर नौकरी करना एवं लोकहित की भावना के लिए आवाज उठाना, जेल जाना नारी के चारित्रिक विशषता के सशक्त उदाहरण हैं। प्रेमचंद के स्त्री पात्र में शहरीय वर्ग, गाँव का किसान समुदाय और अभिजात्य वर्ग के दर्शन होते है।

प्रेमचंद ने विधवा समस्या को अपने साहित्य में बार–बार उभारा है। 'गबन' में रतन के माध्यम से प्रेमचंद कहते हैं–**''न जाने किस पानी ने यह कानून बनाया था कि पति के मरते ही हिन्दू नारी इस प्रकार स्वत्य–वंचित हो जाती है।''**प्रेमचंद स्त्री के आर्थिक स्वतंत्रता एवं विकास के पक्षधर हैं किन्तु पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण को नकारते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम गोदान की मिस मालती में देख सकते हैं।

स्त्री मन का सार तत्व तो प्रमचंद ने अपने सुप्रद्धि उपन्यास सेवासदन में प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद की भावना वेश्यावृत्ति पर कोमल रही है। उनका मानना है किइस तरह की महिलाएँ समाज द्वारा ठुकराई होती है। अगर उन्हें बेहतर जीवन जीने का मौका मिले तो वेश्यावृति उनकी पसंद हरगिज नहीं होगी। इस उपन्यास में वेश्या को दहेज का दुष्परिणाम बताया है। साथ–ही–साथ स्त्री की कोमल भावाओं से हमें अवगत कराया है जो उसके भीतर बदलाव का कारण होता है। प्रेमचंद सुमन के माध्यम से नारी की मनःस्थिति को प्रसतुत करते हुए करते हैं– ''**मेरे मन में नित यही चिंता रहती थी कि आदर कैसे मिले।''** यह बात पुरानी है परंतु प्रासंगिक आज भी उतनी ही है। आज के बदलते दोर में समाज जितना तीव्रता से करवटें ले रहा है, परिवर्तन की उतनी तीव्रता स्त्रियों में कहाँ है। आज की मॉडर्न स्त्री भी नित इस सवाल से घिरी रहती है कि हम करें तो क्या करें। अपन परम्परागत मर्यादा का निर्वाह करें या बदलते समाज के साथ चलें।

## संदर्भ पुस्तकें


1. हिन्दी उपन्यास : एक अंतरआत्मा– पृष्ठ– 49
2. गोदान : नया परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ संख्या–138प
3. प्रेमचंद और नारी/शब्द शिल्पी
   https://vimsisahitya.wordpress.com
4. गोदान में प्रेमचंद की नारी दृष्टि– साहित्य विमर्श
   https://sahityavimarsh.com